ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 156-157**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

समाज में धर्म के नाम पर अंधविश्वास का बढ़ावा और नैतिकता का संकट

डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव, 2. डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव

शिक्षा शास्त्र, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी0 जी0 कालेज, सुदिष्टपुरी– रानीगंज, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-02.05.2026, Revised-11.05.2026, Accepted-18.05.2026, **E-mail:archanasri2610@gmail.com**

सारांशः ***धर्म मानव समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है, जिसका मूल उद्देश्य व्यक्ति को नैतिकता, सदाचार, करुणा, सहिष्णुता और मानव कल्याण की ओर प्रेरित करना है। धर्म मनुष्य के जीवन को दिशा प्रदान करता है तथा सामाजिक एकता और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है। किंतु जब धर्म के वास्तविक स्वरूप से हटकर उसके नाम पर अंधविश्वास, पाखंड, रूढ़िवादिता और शोषण को बढ़ावा दिया जाता है, तब धर्म अपने मूल उद्देश्य से भटक जाता है। वर्तमान समाज में अनेक स्थानों पर धर्म के नाम पर चमत्कारवाद, तंत्र–मंत्र, झाड़–फूंक, ढोंगी बाबाओं का प्रभाव तथा अवैज्ञानिक मान्यताओं का प्रसार देखने को मिलता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक चेतना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण कमजोर पड़ते हैं तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है।***

यह लेख धर्म और अंधविश्वास के मध्य अंतर को स्पष्ट करते हुए समाज में बढ़ते अंधविश्वास, उसके कारणों, नैतिक संकट तथा समाधान के उपायों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कुंजीभूत शब्द– अंधविश्वास, नैतिकता का संकट, नैतिकता, सदाचार, करुणा, सहिष्णुता, मानव कल्याण, चमत्कारवाद,झाड़फूंक, तंत्रमंत्र।

प्रस्तावना– मानव सभ्यता के विकास में धर्म की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। धर्म ने व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, त्याग और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाया है। भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश में धर्म सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। धर्म व्यक्ति को आत्मिक शांति प्रदान करने के साथ–साथ समाज में अनुशासन और नैतिकता स्थापित करने का कार्य करता है, किन्तु समय के साथ धर्म के वास्तविक स्वरूप में अनेक विकृतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। कुछ स्वार्थी तत्वों ने धर्म को जनकल्याण के साधन के बजाय व्यक्तिगत लाभ और सामाजिक नियंत्रण का माध्यम बना लिया। परिणामस्वरूप धर्म के नाम पर अंधविश्वास, पाखंड और अवैज्ञानिक मान्यताओं का प्रसार होने लगा। आज भी अनेक लोग शिक्षा और वैज्ञानिक सोच के विकास के बावजूद चमत्कारों, झूठे धार्मिक दावों और अंधविश्वासों के प्रभाव में आ जाते हैं। यह स्थिति केवल सामाजिक विकास में बाधक नहीं है, बल्कि नैतिकता के संकट को भी जन्म देती है। जब व्यक्ति धर्म के मूल सिद्धांतों की अपेक्षा बाहरी आडंबरों और अंधविश्वासों को अधिक महत्व देने लगता है, तब नैतिक मूल्यों का ह्रास होना स्वाभाविक है।

धर्म और अंधविश्वास : एक वैचारिक अंतर– धर्म और अंधविश्वास को अक्सर एक–दूसरे का पर्याय मान लिया जाता है, जबकि दोनों में मौलिक अंतर है। धर्म का आधार विवेक, नैतिकता, आत्मानुशासन और मानव कल्याण है। धर्म व्यक्ति को सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इसके विपरीत अंधविश्वास का आधार तर्कहीनता, भय, अज्ञानता और अवैज्ञानिक सोच है। धर्म व्यक्ति को स्वतंत्र चिंतन की प्रेरणा देता है, जबकि अंधविश्वास व्यक्ति को बिना विचार किए किसी बात को स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है। धर्म मानवता और नैतिकता को सशक्त करता है, जबकि अंधविश्वास सामाजिक शोषण और मानसिक गुलामी को बढ़ावा देता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "धर्म का संबंध आत्मा की स्वतंत्रता से है, न कि अंधविश्वास से।" इसी प्रकार महात्मा गांधी ने भी धर्म को नैतिकता का आधार माना था, न कि रूढ़ियों और पाखंडों का।

समाज में अंधविश्वास के बढ़ने के कारण– 1. अशिक्षा और अज्ञानताः अंधविश्वास के प्रसार का सबसे बड़ा कारण शिक्षा का अभाव है। जब व्यक्ति वैज्ञानिक तथ्यों और तार्किक चिंतन से परिचित नहीं होता, तब वह अनेक मिथकों और भ्रांतियों को सत्य मान लेता है। ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ शहरी समाज में भी कई शिक्षित लोग विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों से प्रभावित दिखाई देते हैं। इसका कारण केवल औपचारिक शिक्षा नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है।

2. भय और असुरक्षा की भावनाः मनुष्य स्वभावतः सुरक्षा और स्थिरता चाहता है। बीमारी, आर्थिक संकट, प्राकृतिक आपदा या व्यक्तिगत समस्याओं के समय लोग तर्कसंगत समाधान खोजने के बजाय चमत्कारों और अंधविश्वासों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। भय की स्थिति में व्यक्ति की विवेकशीलता कमजोर पड़ जाती है और वह आसानी से भ्रमित हो सकता है।

3. ढोंगी धार्मिक व्यक्तियों का प्रभावः समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो धर्म की आड़ में लोगों की भावनाओं का शोषण करते हैं। वे स्वयं को चमत्कारी शक्तियों का स्वामी बताकर लोगों को भ्रमित करते हैं और आर्थिक तथा मानसिक रूप से उनका शोषण करते हैं। ऐसे तथाकथित धार्मिक नेताओं के कारण धर्म की छवि भी प्रभावित होती है व समाज में अंधविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

4. सामाजिक परंपराएँ और रूढ़ियाँः कई बार अंधविश्वास पीढ़ी–दर–पीढ़ी परंपरा के रूप में चलता रहता है। लोग बिना उसके औचित्य को समझे उसे अपनाते रहते हैं। कुछ सामाजिक मान्यताएँ समय के साथ अप्रासंगिक हो जाती हैं, लेकिन रूढ़िवादी सोच के कारण उनका पालन जारी रहता है।

5. मीडिया और सोशल मीडिया की भूमिकाः आज डिजिटल युग में झूठी खबरें, अप्रमाणित धार्मिक दावे और चमत्कार संबंधी वीडियो तेजी से फैलते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से अंधविश्वासों का प्रचार पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक हो गया है।

धर्म के नाम पर अंधविश्वास के विभिन्न रूप– समाज में अंधविश्वास अनेक रूपों में दिखाई देता हैः

1. **तंत्र–मंत्र और झाड़–फूंकः** बीमारियों या समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक चिकित्सा के बजाय तंत्र–मंत्र या झाड़–फूंक का सहारा लेना।
2. **चमत्कारवादः** कुछ व्यक्तियों द्वारा स्वयं को ईश्वरीय शक्ति का अवतार बताना तथा चमत्कारों के माध्यम से लोगों को प्रभावित करना।
3. **ग्रह–नक्षत्रों का अतार्किक भयः** ज्योतिष का अध्ययन एक विद्या हो सकता है, लेकिन हर समस्या को ग्रहों के प्रभाव से जोड़कर भय उत्पन्न करना अंधविश्वास का रूप ले सकता है।
4. **पशु बलि और अमानवीय प्रथाएँः** धार्मिक आस्था के नाम पर हिंसा या अमानवीय कृत्यों को उचित ठहराना भी अंधविश्वास की श्रेणी में आता है।
5. **भाग्यवादः** सभी समस्याओं और असफलताओं को भाग्य का परिणाम मानकर कर्म और प्रयास की उपेक्षा करना भी

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

अंधविश्वास को बढ़ावा देता है।

नैतिकता का संकटः कारण और स्वरूप– धर्म का मूल उद्देश्य नैतिकता की स्थापना है, लेकिन जब धर्म का स्थान अंधविश्वास ले लेता है तो नैतिक संकट उत्पन्न होता है।

1. **सत्य और विवेक का ह्रासः** नैतिकता का आधार सत्य और विवेक है। अंधविश्वास व्यक्ति को तर्क और प्रमाण से दूर ले जाता है, जिससे सत्य की खोज कमजोर हो जाती है।
2. **शोषण की प्रवृत्तिः** धर्म के नाम पर आर्थिक, सामाजिक और मानसिक शोषण नैतिक पतन का स्पष्ट संकेत है। जब लोग दूसरों की धार्मिक भावनाओं का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं, तब नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है।
3. **सामाजिक विभाजनः** अंधविश्वास और कट्टरता समाज में भेदभाव तथा असहिष्णुता को जन्म दे सकते हैं। इससे सामाजिक एकता कमजोर होती है।
4. **मानवीय मूल्यों की उपेक्षाः** धर्म का वास्तविक संदेश मानव सेवा और करुणा है, लेकिन अंधविश्वास के प्रभाव में लोग बाहरी आडंबरों को अधिक महत्व देने लगते हैं। परिणामस्वरूप प्रेम, सहानुभूति और सेवा जैसे नैतिक मूल्य पीछे छूट जाते हैं।

भारतीय समाज में नैतिकता का संकट– वर्तमान भारतीय समाज में भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण नैतिक मूल्यों पर दबाव बढ़ा है। धर्म के नाम पर बढ़ते अंधविश्वास के कारणः

1. सामाजिक विश्वास कमजोर हो रहा है।
2. भ्रष्टाचार और शोषण की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं।
3. जब धर्म का संबंध केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित रह जाता है और नैतिकता को महत्व नहीं दिया जाता, तब समाज में नैतिक संकट गहराने लगता है।
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास बाधित हो रहा है।
5. युवा पीढ़ी भ्रम और द्वंद्व की स्थिति में है।

शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की भूमिका– अंधविश्वास से मुक्ति का सबसे प्रभावी साधन शिक्षा है। शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति में तार्किक सोच, विवेक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51(क)(ह) के अनुसार प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद तथा ज्ञानार्जन की भावना का विकास करे। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा तथा वैज्ञानिक चेतना को बढ़ावा देना आवश्यक है।

धर्म और नैतिकता का पुनर्स्थापन– समाज में नैतिकता को सुदृढ़ करने के लिए धर्म के मूल सिद्धांतों को पुनः समझने की आवश्यकता है। धर्म का वास्तविक स्वरूपः **सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सहिष्णुता, सेवा, न्याय** इन मूल्यों पर आधारित है। यदि धर्म को अंधविश्वास और पाखंड से मुक्त कर उसके नैतिक स्वरूप को स्थापित किया जाए, तो समाज में नैतिक पुनर्जागरण संभव है।

अंधविश्वास और नैतिक संकट के समाधान–

1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकासः समाज में तर्क, विवेक और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
2. मूल्यपरक शिक्षाः विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में नैतिक शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए।
3. सामाजिक जागरूकताः जन–जागरूकता अभियानों के माध्यम से अंधविश्वासों के दुष्परिणामों को समझाया जाना चाहिए।
4. धार्मिक सुधारः धार्मिक संस्थाओं को मानव कल्याण और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
5. मीडिया की जिम्मेदारीः मीडिया को अंधविश्वासों के प्रचार के बजाय वैज्ञानिक तथ्यों और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना चाहिए।
6. युवा पीढ़ी की भूमिकाः युवा वर्ग सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्हें विवेकशीलता और नैतिकता के आधार पर समाज को दिशा प्रदान करनी चाहिए।

निष्कर्ष– धर्म मानव जीवन को नैतिक दिशा प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, किंतु जब धर्म के नाम पर अंधविश्वास, पाखंड और अवैज्ञानिक मान्यताओं का प्रसार होने लगता है, तब समाज में नैतिक संकट उत्पन्न हो जाता है। अंधविश्वास व्यक्ति की विवेकशीलता को कमजोर करता है तथा सामाजिक शोषण, असमानता और नैतिक पतन को बढ़ावा देता है।

वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक स्वरूपकृसत्य, करुणा, सेवा, सहिष्णुता और मानवताकृको पुनः स्थापित किया जाए। शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक जागरूकता और मूल्यपरक जीवन शैली के माध्यम से अंधविश्वासों का प्रभाव कम किया जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि धर्म और नैतिकता का संबंध अटूट है, किंतु धर्म का आधार विवेक और मानवता होना चाहिए, न कि अंधविश्वास। एक जागरूक, शिक्षित और नैतिक समाज ही वास्तविक धार्मिकता तथा सामाजिक प्रगति का आधार बन सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दुर्गादास बसु – भारतीय संविधान का परिचय।
2. महात्मा गांधी – सत्य के प्रयोग।
3. स्वामी विवेकानन्द – विवेकानन्द साहित्य।
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – भारतीय दर्शन।
5. एम.एन. श्रीनिवास – Social Change in Modern India।
6. योगेन्द्र सिंह – भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण।
7. राम आहूजा – भारतीय समाज।
8. डॉ. श्यामाचरण दुबे – भारतीय समाज।
9. भारतीय संविधान, अनुच्छेद 51(क)(ह)।
10. NCERT & मूल्य शिक्षा एवं नैतिक विकास।
11. UNESCO Report on Ethics and Education.
12. NITI Aayog एवं विभिन्न सामाजिक जागरूकता संबंधी रिपोर्टें।

*****